भारतीय हिन्दी परिषद् प्रयाग

हिन्दी अनुशीलन

(पीयर रिव्यूड रिसर्च जर्नल)

ISSN : 2249-930X

प्रकाशक : डॉ० निर्मला अग्रवाल, प्रबंधमंत्री, भारतीय हिन्दी परिषद्
हिन्दी–विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद
Website- www.bhartiyahindiparishad.org
Email- hindianusheelan@gmail.com

मूल्य : रु0 50.00

अक्षर संयोजन : जितेन्द्र कुमार मिश्र, मो0– 09452365928
मुद्रक : नागरी प्रेस, अलोपीबाग, इलाहाबाद

पत्रिका प्रकाशन व प्राप्ति– अगस्त, 2019

अनुक्रम

विमर्श — 5
प्रो0 नन्दकिशोर पाण्डेय

संवाद — 17
डॉ0 नरेंद्र मिश्र

1. नई एवं गौण गद्य विधाएँ — 28
डॉ0 सूर्यप्रसाद दीक्षित

2. ललित निबन्ध : साहित्य की पुनर्नवा होती धरती — 33
डॉ0 श्रीराम परिहार

3. आचार्य शुक्ल और आचार्य द्विवेदी के आलोचनात्मक द्वंद्व — 43
डॉ0 करुणाशंकर उपाध्याय

4. हिंदी डायरी साहित्य का विकासक्रम एवं सृजनात्मक डायरी — 49
डॉ0 कुबेर कुमावत

5. हरिशंकर परसाई के व्यंग्य का प्रभाव — 57
डॉ0 राजेशचन्द्र पाण्डेय

6. हिन्दी महिला कथाकारों की आत्मकथाएँ — 62
डॉ0 निर्मला अग्रवाल

7. हिन्दी यात्रा साहित्य की यात्रा — 71
डॉ0 राजकुमार उपाध्याय मणि

8. ई–लेखन और उसकी महत्वपूर्ण विधा ब्लॉग — 74
डॉ0 शक्तिप्रसाद द्विवेदी

9. आत्मकथा को अमृतलाल नागर का प्रदेय — 84
डॉ0 प्रीति मिश्रा

10. नई सदी का कथेतर गद्य — 92
डॉ0 नरेन्द्र मिश्र

11. कुछ कही कुछ अनकही आत्मकथा में परिवेश अंकन — 103
डॉ0 उर्मिला सिंह

12. अपराजेय व्यक्तित्व का विराट फलक : व्योमकेश दरवेश — 107
डॉ0 आनंदप्रकाश गुप्ता

13. पत्र साहित्य : आत्मीयता का अनंत विस्तार — 114
डॉ0 कृष्णगोपाल मिश्र

14. हिन्दी का डायरी साहित्य : दशा एवं दिशा — 120
डॉ0 हरेकृष्ण तिवारी

15. इक्कीसवीं सदी में हिन्दी आलोचना : नई चुनौतियां — 128
डॉ0 विनिता चौहान

16. इक्कीसवीं सदी के नाटक एवं रंगमंच : सृजन की चुनौतियां — 135
प्रो0 अलका पाण्डेय

17. हिन्दी का डायरी साहित्य और रमेशचंद्र शाह की डायरियां — 140
प्रो0 स्मृति शुक्ल

18. स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी संस्मरण–विधा : प्रेरक उपलब्धियां — 148
डॉ0 कृष्णचन्द्र गोस्वामी

19. राजस्थान का समकालीन कथेतर गद्य — 154
डॉ0 नवीन नंदवाना

20. हिन्दी की महिला आत्मकथाओं में नारी जीवन का यथार्थ — 163
डॉ0 मुकेश कुमार

21. बेनीपुरी का डायरी साहित्य — 168
डॉ0 अर्पणा

22. साहित्यकार की दृष्टि–सृष्टि में डूबती–उतरती विधा साक्षात्कार — 173
डॉ0 मीता शर्मा

23. बिसनाथ के बिस्कोहर की कथा — 182
प्रो0 हरीश कुमार शर्मा

24. कथेतर गद्य विधा : आत्मकथा और जीवनी — 187
डॉ0 बलजीत श्रीवास्तव

25. भोजपुरी कथेतर गद्य साहित्य और डॉ0 विवेकी राय — 196
डॉ0 विनम्र सेन सिंह

26. 'पथ के साथी' संस्मरणात्मक रेखाचित्र की भाषा शैली — 203
डॉ0 पुष्पा रानी

27. ललित निबंध परम्परा में कुबेरनाथ राय का अवदान — 207
डॉ0 राजेश कुमार

28. हिन्दी भाषा एवं साहित्य को नये आयाम देने में वेब माध्यम — 221
डॉ0 अरविन्द कुमार सिंह

29. आत्मकथा एवं जीवनी साहित्य : अतीत और वर्तमान — 230
डॉ0 अनिल राय

30. हँसो न तारा : विडंबनाओं का अध्ययन — 235
डॉ0 कामिनी ओझा

31. परिषद के 44वें अधिवेशन का समाहार वक्तव्य — 240
डॉ0 पवन अग्रवाल

काका कालेलकर का कथेतर गद्य

प्रो0 नन्दकिशोर पाण्डेय

काका साहब कालेलकर की मातृभाषा मराठी थी। 10 अप्रैल, 1917 को चंपारण जाते समय बड़ौदा स्टेशन पर महात्मा गांधी जी की भेंट काका साहब से हुई। उस भेंट के समय गांधी जी ने साबरमती आश्रम में रहने और उससे संबंधित व्यवस्था देखने का जिम्मा उन्हें दिया, जिसे काका साहब ने स्वीकार कर लिया और पूरे मनोयोग से वहाँ की व्यवस्था को देखने लगे। उसी वर्ष 'गुजरात शिक्षा परिषद' के दूसरे अधिवेशन के लिए गांधी जी चुने गए। इस अधिवेशन में 'हिंदी ही इस देश की राष्ट्रभाषा हो सकती है' इस विषय पर एक निबंध लिखने के लिए और कार्यक्रम में उपस्थित रहने के लिए गांधी जी ने काका कालेलकर को कहा। उस समय उनकी उम्र 32 वर्ष की थी। कह सकते हैं कि काका साहब ने 32 वर्ष से हिंदी की सेवा प्रारंभ की। गद्य और पद्य दोनों विधाओं में लिखे कथेतर गद्य का उनका क्षेत्र विस्तृत है। उन्होंने विशेष रूप से ललित निबंध, यात्रा वृतांत, रेखाचित्र, डायरी और पत्र लिखे। मराठी भाषी होकर वे गुजराती भाषा में पूरी तरह से रमे हुए थे। गुजराती और मराठी समान रूप से उन्हें प्रिय थीं। वे दोनों भाषाओं का सहजता से प्रयोग करते थे। लोकमान्य तिलक के 'केसरी' का हिंदी संस्करण वे निरंतर पढ़ते थे। इसके पीछे का एक उद्देश्य हिंदी ज्ञान को बढ़ाना भी था। धीरे–धीरे उनकी रुचि और प्रवृत्ति हिंदी की ओर होने लगी। वे मराठी संतों की हिंदी रचनाओं से परिचित थे।

काका कालेलकर ने ललित साहित्य की भी रचना की। इस शीर्षक के अंतर्गत बहुत से निबंध हैं। 'उत्तर की दीवारें' पुस्तक में उनके जेल जीवन का अनुभव है। इस पुस्तिका का अनुवाद काका कालेलकर के अनुसार पंजाब के एक नवयुवक श्री रामकृष्ण भारती ने किया है। पुस्तिका के संदर्भ में उन्होंने लिखा है कि, "जिस जेल–जीवन का वर्णन 'उत्तर की दीवारें' में किया गया है, उसका अनुभव मैंने सन् 1923 में किया था। जेल में अनुभवों का एक विस्तृत ग्रंथ लिखने का विचार था। नमूने के कैदियों का स्वभाव–वर्णन, जेल के अमलदारों की खूबियाँ, जेल के कानूनों का स्वरूप और उनका असर और खासकर जेल के दिनों में जिनका अध्ययन किया था उन मुसलमानों के इस्लाम, ईसाइयों के विश्वासी धर्म, बौद्धों के कल्याण धर्म, वैष्णवों के भागवत धर्म और श्रीकृष्ण के गीता धर्म का तुलनात्मक वर्णन आदि लिखने का विचार था। परंतु यह कुछ भी हो न सका। सिर्फ ऋतुओं का, उनके बादलों का, आकाश के तारों का तथा कृमि, कीट, पतंग, पशु–पक्षी आदि मनुष्येतर प्राणियों का जो कुछ थोड़ा–सा जिक्र एक छोटे से कार्ड पर लिख रहा था, उसी की मदद से अनेक बरसों के बाद यह एक प्रकरण लिखा और उसे प्रकाशित किया।"

राजस्थान का समकालीन कथेतर गद्य

डॉ. नवीन नन्दवाना

हिंदी के कथेतर साहित्य की विविध विधाओं यथा– आत्मकथा, जीवनी, संस्मरण–रेखाचित्र, निबंध, ललित निबंध, यात्रा–वृत्तांत, डायरी आदि ने इन दिनों अपनी उपस्थिति और महत्ता से आलोचकों का ध्यान आकृष्ट किया है। वर्ष पर्यंत यत्र–तत्र हो रही संगोष्ठियों व व्याख्यानों में इन विधाओं में सृजित साहित्य की गूँज–अनुगूँज सुनाई पड़ रही है। ललित निबंध, यात्रा–वृत्तांत, डायरी के लेखन को लेकर भी हिंदी में एक समृद्ध और विशिष्ट परम्परा रही है। राजस्थान के हिंदी लेखन में भी इसका स्वर सुनाई पड़ता है।

यात्रा वृत्तांत :

"मनुष्य जाति का इतिहास अपनी यायावरी प्रवृत्ति से संबद्ध है। संभवतः यह मानव की मूल प्रवृत्ति है। प्रारंभ में यह उसके लिए आवश्यक भी थी। परंतु उसके सौंदर्यबोध के विकास के साथ चतुर्दिक फैले हुए जगत का आकर्षण भी उसके लिए बढ़ता गया है। यहाँ के देशों में विविधता है, ऋतुओं में भी परिवर्तन होता है और साथ–साथ ही प्रकृति के रूपों में विभिन्नता और सौंदर्य का वैचित्र्य है। इसके अतिरिक्त सर्जन में एक स्वतः गति है, जिसके साथ ताल मिलाकर चलना स्वतः एक उल्लास है। इस प्रकार सौंदर्यबोध की दृष्टि से उल्लास की भावना से प्रेरित होकर यात्रा करने वाले यायावर एक प्रकार से साहित्यिक मनोवृत्ति के माने जा सकते हैं और उनकी मुक्त अभिव्यक्ति को यात्रा साहित्य कहा जाता है।"[1]

यात्रा वृत्तांत लेखन की शुरुआत भी हम भारतेंदु युग से ही मान सकते हैं। इस युग में स्वयं भारतेंदु हरिश्चंद्र ने 'सरयू पार की यात्रा', 'लखनऊ की यात्रा' और 'हरिद्वार की यात्रा' जैसे यात्रा वृत्तांत लिखे। इस युग में प्रताप नारायण मिश्र ने भी 'गया यात्रा' और 'विलायत यात्रा' जैसी रचनाएँ लिखीं। इस युग में भारत के विविध तीर्थ स्थानों की यात्राओं के वर्णन हैं तो विदेश यात्राओं में लंदन की यात्राओं के वर्णन को प्रमुखता मिली। द्विवेदी युग में श्रीधर पाठक, लोचनप्रसाद पांडेय, गोपालराम गहमरी, सत्यदेव परिव्राजक आदि ने यात्रा वृत्तांतों की रचना की। गोपालराम गहमरी ने 'लंका यात्रा का विवरण' तथा सत्यदेव परिव्राजक ने 'अमेरिका दर्शन', 'मेरी कैलाश यात्रा' तथा 'कैलाश भ्रमण' की रचना की। छायावादी युग में जवाहर लाल नेहरू, राहुल सांकृत्यायन, सेठ गोविंद दास आदि ने यात्रा वृत्तांत रचना कर इस विधा को नई ऊर्जा प्रदान की। सत्यदेव परिव्राजक ने इस कालखंड में भी यात्रा वृत्तांतों की

पीयर रिव्यूड रिसर्च जर्नल
ISSN : 2249-930X

रचना की। इस अवधि में उन्होंने 'मेरी जर्मन यात्रा', 'यात्री मित्र', 'यूरोप की सुखद स्मृतियां', 'ज्ञान के उद्यान में' आदि की रचना की। जवाहर लाल नेहरू ने 'रूस की सैर' की रचना की। राहुल सांकृत्यायन इस विधा की दृष्टि से सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण और चर्चित नाम है। इस कालखंड में उन्होंने 'तिब्बत में सवा वर्ष', 'मेरी यूरोप यात्रा' और 'मेरी तिब्बत यात्रा' शीर्षकों से यात्रा वृत्तांत रचे।

छायावादोत्तर काल में भी सत्यदेव परिव्राजक, राहुल सांकृत्यायन, सेठ गोविंद दास के नाम उल्लेखनीय हैं। इस युग में राहुल सांकृत्यायन ने 'राहुल यात्रावली', 'यात्रा के पन्ने', 'एशिया के दुर्गम भूखंडों में', 'किन्नर देश में', 'रचनाओं का सृजन किया। उन्होंने 'चीन में कम्यून' और 'चीन में क्या देखा' रचनाएं भी लिखीं। डॉ. नगेंद्र ने 'तंत्रालोक से यंत्रालोक' तथा 'अप्रवासी की यात्राएँ' की रचना की। "पैरों में पंख बांधकर' (1952) तथा 'उड़ते चलो, उड़ते चलो' (1954) नाम्नी रचनाओं में रामवृक्ष बेनीपुरी ने डायरी–शैली के माध्यम से इंग्लैण्ड, स्कॉटलैंड, स्विटजरलैंड, फ्रांस, इटली आदि देशों के दूतावासों, देहातों, दर्शनीय स्थानों के विस्तृत विवरण प्रस्तुत किए हैं।"[2] इस युग में यशपाल ने 'राह बीती', दिनकर ने 'देश विदेश', 'मेरी यात्राएँ', अज्ञेय ने 'एक बूँद सहसा उछली', 'अरे यायावर रहेगा याद', प्रभाकर माचवे ने 'गोरी नज़रों में हम', विष्णु प्रभाकर ने 'हँसते निर्झर : दहकती भट्टी', 'ज्यातिर्पुंज हिमालय', 'गोविंद मिश्र ने 'धुंध भरी सुर्खी', शिवानी ने 'यात्रिक', मोहन राकेश ने 'आखिरी चट्टान तक', रघुवंश ने 'हरी घाटी' और निर्मल वर्मा ने 'चीड़ों पर चांदनी' की रचना कर इस विधा की श्रीवृद्धि की।

यात्रा विवरण लिखते समय रचनाकार को बहुत सजग रहने की आवश्यकता होती है। "यात्री अपने साहित्य में संवेदनशील होकर भी निरपेक्ष रहता है। ऐसा न होने पर यात्रा के स्थान पर यात्री अधिक प्रधान हो उठने की संभावना रहती है। यात्रा में स्वतः स्थान, दृश्य, प्रदेश, नगर, गाँव मुखरित होते हैं। उनका अपना व्यक्तित्व उभरता है। इस पथ पर मिलने वाले नर–नारी, बच्चे–बूढ़े, अपने नानाविध चरित्रों के साथ उनके व्यक्तित्व को अधिक स्पंदित और मुखरित करते हैं। मार्ग में पड़ने वाले मंदिरों, मस्जिदों, मीनारों, विजय स्तंभों, स्मारकों, मकबरों, किलों और पुराने महलों से संस्कृति, कला और इतिहास के उपकरणों को जुटकर यात्रा की पीठिका तैयार होती है। फिर भी अपने को अदृश्य भाव से सर्वत्र रखना ही होता है, यात्री अपनी यात्रा को मानसिक प्रतिक्रियाओं के रूप में ही ग्रहण करता है। अपने को केंद्र में रखकर भी प्रमुख न होने देना साहित्यिक यायावर का कर्तव्य है, क्योंकि यदि लेखक का व्यक्तित्व उभरेगा तो अन्य सब गौण हो जाएगा और यात्रा साहित्य न होकर आत्मचरित ही रह जाएगा, यात्रा संस्मरण न रहकर आत्मसंस्मरण हो जाएगा।"[1]

इस विधा की समकालीन रचनाओं में विष्णु प्रभाकर की 'ज्यातिपुंज हिमालय', 'राह चलते चलते', 'हिमशिखरों की छाया में', 'हमसफर मिलते रहे', 'आकाश एक है', गोविंद मिश्र का 'दरख्तों के पार शाम', मनोहर श्याम जोशी ने 'ये विचित्र जर्मन', रामदरश मिश्र का 'तन हुआ इंद्रधुनष', 'भोर का सपना', 'पड़ोस की खुशबू', हिमांशु जोशी का 'सूरज चमके आधी रात', नरेश मेहता का 'साधु चले न जमात' तथा

पीयर रिव्यूड रिसर्च जर्नल
ISSN : 2249-930X

'कितना अकेला आकाश', धर्मवीर भारती का 'यात्रा चक्र', श्रीलाल शुक्ल का 'अगली शताब्दी का शहर', विश्वनाथ प्रसाद तिवारी का 'आत्मा की धरती', अमृत लाल वेगड़ का 'सौंदर्य नदी नर्मदा' विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

स्थानीयता, तथ्यात्मकता, रोचकता, कलात्मकता, चित्रात्मकता, कल्पना प्रवणता, वस्तुनिष्ठता, संचरणशीलता, संवेदनशीलता, वैयक्तिकता आदि को यात्रा वृत्तांत के तत्वों के रूप में स्वीकारा जा सकता है।

फलौदी (राजस्थान) में जन्मे ओम थानवी ने अपने यात्रा संग्रह 'मुअनजोदड़ो' से विशेष ख्याति अर्जित की। इस कृति के लिए उन्हें 24वें बिहारी पुरस्कार से नवाजा गया। इसे सार्क लिटरेरी अवार्ड और शमशेर पुरस्कार भी मिल चुका है। वर्ष 2011 में प्रकाशित इस कृति में यात्रा विवरण के माध्यम से जिज्ञासाओं के साथ बौद्धिक चिंतन और भारतीय सभ्यता के विविध सौपानों का वर्णन किया। इस रचना के माध्यम से रचनाकार ने मोहनजोदड़ो व हड़प्पा के वैशिष्ट्य, उसके नगर नियोजन, वास्तुकला व लिपि आदि के विषय में सहज और सरस भाषा में वर्णन किया। "यात्राएँ जैसी भी हों, उनका अर्थ नहीं बदलता। इसलिए कि हर यात्रा में एक अर्थ निहित है, जो उसका स्थायी भाव है। कि किनारे नहीं जाना है। सूरते–हाल जो भी हो। वैसे भी पहुँचना कभी मकसद नहीं हो सकता। न यात्राओं का। न जिन्दगी का। यात्राएँ तो होती ही हैं पहुँची हुई। अपने हर कदम पर उसी में सब हासिल–जमा। बशर्ते नजर ठीक हो और नजरिया भी। ओम थानवी के पास दोनों की कमी नहीं है। बल्कि इफरात है। नतीजतन, यात्रा के अलावा पढ़ाकू फुरसतों के साथ उन्होंने 'मुअनजोदड़ो' में अपने रंग भर दिए हैं। उनका यह नजरिया ही किताब का असली हासिल है। किसी देश या शहर के ऊपर से उड़ान भरते हुए उसके बारे में सब कुछ जान लेने वाले यात्रा वृत्तांतों से अलग, 'मुअनजोदड़ो' में नए करीने से चीजें देखने का सलीका है। गहराइयों में उतरता। टीलों की ऊँचाइयों तक ले जाता। वह आप पर कुछ लादता–थोपता नहीं। साथ चलता रहता है। बहैसियत एक ईमानदार दोस्त। 'मुअनजोदड़ो' की एक और खास बात, वह यात्रा को रैखिक नहीं रहने देता। बल्कि कई बार अहसास दिलाता है कि आप किसी बहुमंजिला इमारत की लिफ्ट में हैं और हर मंजिल एक कथा है। हमारे पूर्वजों की अनवरत कथा, जो जारी है अनन्तिम है।"[3]

प्रेमचंद गांधी कविता, निबंध आदि की रचना की। इनका एक यात्रा वृत्त 'प्रेमचंद गांधी की चीन यात्रा' शीर्षक से प्रकाशित हुआ। राजस्थान निवासी रामेश्वर लाल टांटिया की विदेश यात्राओं के वृत्तांत विभिन्न पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए। बाद में ये 'रामेश्वरलाल टांटिया समग्र' में भी प्रकाशित हुए। निरंजननाथ आचार्य और चैतन्य गिरि गोस्वामी ने 'आस्ट्रेलिया के आंचल में' लिखा। इसमें आस्ट्रेलिया के जनजीवन व स्थानों के स्मरण के साथ–साथ राजस्थान का भी स्मरण है। 'एक अविस्मरणीय यात्रा' (मदनलाल शर्मा), चंपारेन की सैर (मदन केवलिया), 'मिलते क्षितिज' (मोतीलाल गुप्त), 'मनसा मंदिर की यात्रा' (श्रीराम शर्मा), 'बदरी केदार से मसूरी (राजेंद्र प्रसाद सिंह), 'जीवन यात्रा का कोलाज' (रमेश गर्ग), 'अमेरिका के अंचल में (बद्रीप्रसाद जोशी), 'दिल्ली–पीकिंग', 'यूरोप के सात देशों में', 'क्या देखा क्या समझा', 'दिल्ली से दिल्ली' (जवाहिर लाल जैन), 'मेरी काश्मीर यात्रा (राजेंद्रशंकर

पीयर रिव्यूड रिसर्च जर्नल
ISSN : 2249-930X

भट्ट) आदि उल्लेखनीय है। राजस्थान के परिप्रेक्ष्य में इस विधा को लेकर बात की जाए और उनमें भी युवाओं के लेखन पर ध्यान दिया जाए तो कहा जा सकता है कि इस विधा में अभी बहुत कुछ किया जाना शेष है।

डायरी :

डायरी हिंदी के कथेतर गद्य की एक प्रमुख विधा है। जिसमें रचनाकार अपने दैनंदिन जीवन के गहन और विचारोत्तेजक प्रसंगों को तिथिनुसार लिपिबद्ध करता है। इसके माध्यम से वह अपने जीवन में घटित विविध मधुर और कटु अनुभूतियों को शब्दबद्ध करता है। वह रचनाकार विविध घटित घटनाओं के संबंध में सम्यक विश्लेषण करते हुए अपना अभिमत देता है। वह संक्षेप में बड़ी सफाई के साथ अपनी बात को अभिव्यक्ति देता है। डायरी पर विचार करते हुए कहा जा सकता है कि– "किसी व्यक्ति के जीवन में किसी विशेष दिन क्या–क्या घटता है, वह क्या–क्या करता है, क्या–क्या अनुभव करता है, क्या–क्या सोचता–विचारता है, किस–किस से मिलता है, आदि का विवरण उसी दिन लिख डालता है, तो ऐसे दिनों की विवरण शृंखला उसकी 'दैनंदिनी' बन जाती है।"[4] डायरी में रचनाकार अपने जीवन के व्यक्तिगत अनुभवों को लिखता है अतः वह स्वयं के लिए होती हैं किंतु इसी डायरी का कुछ अंश ऐसा होता है जो न केवल रचनाकार के लिए अपितु समाज के लिए, पाठकों व विद्यार्थियों के लिए भी उपयोगी होता है। अतः हिंदी में जो डायरियाँ प्रकाशित होती हैं, वह अपने मूल रूप में न होकर संपादित रूप में होती हैं। कभी यह अभिनंदन ग्रंथों, स्मारक ग्रंथों व ग्रंथावलियों के अंशों के रूप में प्रकाशित होती है तो कभी स्वतंत्र पुस्तक के रूप में भी होती हैं। हिंदी में डायरी लेखन का प्रारंभ आधुनिक काल के उदय के बाद से ही माना जाता है। भारतेंदु युग से ही कुछ डायरियों के प्रकाशन की प्रक्रिया आरंभ हुई किंतु आज भी इसे समृद्ध विधा के रूप में नहीं माना जा सकता है।

"चूँकि डायरी में निजता बहुत होती है इसलिए भाषा अंतर्मुखी आए तो कोई आश्चर्य नहीं। डायरी को क्या एक पादरी जैसा होना चाहिए जिसके समक्ष आप अपने गुनाह को कुबूल करते हैं। वस्तुतः यह डायरी लेखक पर ही निर्भर करता है कि डायरी में वो कितना कुबूल करे, कितने गोपन को वह प्रकट करे और कितने प्रकट को वह हाशिए पर ठेल दे। दूसरों के बारे में वह मनोगत धारणाएँ लिख दे या आत्म–प्रशंसा करे। डायरी से वस्तुगत होने की उम्मीद किसी को भी नहीं करनी चाहिए। क्योंकि डायरी अंततः एक व्यक्ति का आत्मप्रक्षेपण है। यदि वह व्यक्ति घायल है तो डायरी में मरहम की गाथा जरूर लिखेगा। जिसकी हत्या न कर सका हो उसकी निंदा जरूर लिखेगा। कुछ लोग डायरी को मृत व्यक्ति का अंतिम बयान मानते हैं और उसे अंतिम साक्ष्य के रूप में प्रतिष्ठित करने की चेष्टा करते हैं। ऐसा कदापि नहीं होना चाहिए। डायरी अंततः एक आत्मगत विधा है, वह वस्तुगत नहीं है। और उसे सिर्फ सुझावात्मक मानना चाहिए न कि अंतिम सत्य। डायरी शत–प्रतिशत लेखक के व्यक्तित्व, आकांक्षा, विफलता के बीच एक झूलता हुआ स्पेस है। डायरी के सत्य होने के दावे बहुत बार किए गए हैं लेकिन उसमें वर्णित तथ्यों की अन्य स्रोतों से जाँच पड़ताल कर भी लें तब भी यह कहना मुश्किल होता है कि डायरी लेखक ने ऐसा क्यों लिखा। मोटिव या उद्देश्य लेखक के मन में अवस्थित होता है, वह कभी भी

पीयर रिव्यूड रिसर्च जर्नल
ISSN : 2249-930X

159

डायरी के पन्नों पर नहीं उतरता। इसलिए डायरी के मूल्यांकन के निकष को दो हिस्सों में रखना ही पड़ेगा। एक हिस्से में सामान्य विशेषताएँ होंगी और दूसरे हिस्से में निजी विशेषताएँ होंगी। डायरी में निष्कपटता और रंजकता, चटपटापन और आत्म का बेलौसपन तो होना ही चाहिए। दूसरी तरफ जिस क्षेत्र से लेखक आता है उस क्षेत्र विशेष से संबंधित अंतरंग जानकारी, अनूठा चिंतन, विजन और उस क्षेत्र से जुड़े दूसरे लोगों के साथ लेखक की अंतर्क्रिया के बारे में बल होना चाहिए। लेकिन यह सब गुण धरे रह जाएँगे यदि आप किसी झंझावात में एन फ्रेंक की तरह फँसे हों। इसीलिए अच्छी डायरी के कुछ ही निकष सुस्थिर रहते हैं बाकी सब चंचल हैं।''[5]

डायरी एक प्रकार से स्वयं के साथ संवाद है। उन यादों व घटनाओं का दस्तावेज है जिन्हें हम भूलना नहीं चाहते। इस विधा की महत्ता हम इस बात से भी समझ सकते हैं कि विगत सदी की सर्वाधिक पढ़ी गई पुस्तकों में एक पुस्तक डायरी विधा की भी है और वह है— एनी फ्रेंक की डायरी। यह एक किशोरी द्वारा रचित वह डायरी है जो कि 1942—1944 के बीच हुए नाजी अत्याचारों को दर्शाती है। जर्मनी में नाजियों का आधिपत्य होने के बाद यहूदियों पर अत्याचार शुरु हुए और ऐनी का परिवार एम्स्टर्डम चला गया। वहाँ भी जब इन अत्याचारों की आहट पहुँची तो ऐनी के परिवार को भी छिप कर रहना पड़ा। आखिर वह भी बंदी बनाकर यातना गृह भेज दिया गया। जहाँ ऐनी के पिता के अलावा सभी की मृत्यु हो गई। उन दिनों के घटनाक्रमों को ही ऐनी ने अपनी डायरी में लिखा था। जो कि ऐनी की मृत्यु के जब स्थितियाँ सामान्य हुई तब उसके पिता ने मूलतः डच भाषा में लिखी गई इस डायरी को 'द डायरी ऑफ ए यंग गर्ल' नाम से प्रकाशित कराया। यह डायरी वास्तव में किसी क्रांतिकारी महान पुरुष या किसी बड़े संत की नहीं बल्कि एक किशोरी की आवाज थी जो कि लगभग साठ लाख लोगों का प्रतिनिधित्व करती थी। बीबीसी न्यूज की माने तो ऐनी फ्रेंक की डायरी का अब तक विश्व की 67 भाषाओं में अनुवाद हो चुका है और लगभग सवा करोड़ प्रतियाँ बिक चुकी हैं। ''श्री राधाचरण गोस्वामी की दैनंदिनी को प्रथम साहित्यिक डायरी होने का गौरव प्राप्त है। महात्मा गांधी ने भी इसे 'अमूल्य वस्तु' मानते हुए कहा था कि जो सत्य की आराधना करता है, उसके लिए यह पहरेदार का काम करती है, क्योंकि उसमें सत्य ही लिखना है।''[6]

'हंस', 'समालोचक', 'सारिका', 'दिनमान', 'साप्ताहिक हिंदुस्तान', 'समालोचक', 'नया ज्ञानोदय' और 'इंडिया टुडे' आदि में डायरी लेखन के शुरुआती दौर में समय—समय पर डायरियों के अंश प्रकाशित होते रहे हैं। 'लहर' पत्रिका का डायरी केंद्रित विशेषांक (1967) बहुत चर्चित रहा। यह दो खंडों में प्रकाशित हुआ। इनमें मुख्यतः सुरेंद्र चौधरी, अजित कुमार, राजेंद्र किशोर, रघुवंश, मधुरेश, राजकमल चौधरी और स्वदेश दीपक आदि के डायरी अंश प्रकाशित हुए। हिंदी की चर्चित डायरियों की बात की जाए तो राधाचरण गोस्वामी की 'जेल डायरी' (1835), इलाचंद जोशी की 'डायरी के नीरस पृष्ठ' (1952), धीरेंद्र वर्मा की 'मेरी कॉलेज डायरी' (1958), हरिवंशराय बच्चन की 'प्रवासी की डायरी' (1971), सीताराम सेक्सरिया की 'एक कार्यकर्ता की डायरी' (1972), दिनकर की 'दिनकर की डायरी' (1973), जयप्रकाश नारायण की 'मेरी जेल डायरी' (1977), मोहन राकेश की 'मोहन राकेश की डायरी'

पीयर रिव्यूड रिसर्च जर्नल
ISSN : 2249-930X

(1985), नामवर सिंह के संपादन में प्रकाशित 'मलयज की डायरी' (2000), सबसे कम उम्र में प्रकाशित डायरी में 'आस्था (नवल) की डायरी' (2001), नरेंद्र मोहन की डायरी 'साथ—साथ मेरा साया' (2003), बिशन टंडन की डायरी 'आपातकाल की डायरी' (खंड—1 2002, खंड—2, 2005), कृष्ण बलदेव वैद की डायरी 'ख्वाब है दीवाने का' (2005) उल्लेखनीय है। मनीषा कुलश्रेष्ठ की डायरी का अंश 'वक्त के पंखों से उतर, छूट गया जो उंगलियों की पोरों पर' शीर्षक से लिखा गया।

मुक्तिबोध द्वारा रचित 'एक साहित्यिक की डायरी' एक चर्चित पुस्तक है। किंतु वह वास्तव में वह उस अर्थ में डायरी नहीं है। '' 'डायरी' शब्द एक भ्रम पैदा करता है और यह गलतफहमी भी हो सकती है कि मुक्तिबोध की ये डायरियाँ भी तिथिवार डायरियाँ होंगी। लेकिन वास्तविकता यह है कि 'एक साहित्यिक की डायरी' केवल उस स्तम्भ का नाम था, जिसके अन्तर्गत समय—समय पर मुक्तिबोध को अनेक प्रश्नों पर विचार करने की छूट न केवल सम्पादन की ओर से बल्कि स्वयं अपनी ओर से भी होती थी। 'वसुधा' के पहले नागपुर के 'नया खून' साप्ताहिक में वह 'एक साहित्यिक की डायरी' स्तम्भ के अन्तर्गत कभी अर्द्ध—साहित्यिक और कभी गैर—साहित्यिक विषयों पर छोटी—छोटी टिप्पणियाँ लिखा करते थे, जो एक अलग संकलन के रूप में प्रकाशन के लिए प्रस्तावित हैं। डायरी में केवल 'वसुधा' में प्रकाशित किस्तों—जो स्वयं में स्वतन्त्र निबन्ध हैं— को शामिल करने का उनका उद्देश्य ही यही था कि वे न तो सामयिक टिप्पणियों को साहित्य मानते थे और न साहित्य को सामयिक टिप्पणी वस्तुतः जैसा कि श्री 'अदीब' ने लिखा है, मुक्तिबोध की डायरी उस सत्य की खोज है, जिसके आलोक में कवि अपने अनुभव को सार्वभौमिक अर्थ दे देता है।''[7]

संगरिया (राजस्थान) के गोविंद शर्मा को डायरी लेखन के लिए पी.आर. पहाड़िया पुरस्कार से नवाजा गया। यह सम्मान उन्हें डीग में आयोजित सम्मान समारोह में प्रदान किया गया। राजस्थान के हाड़ौती क्षेत्र में 20 नवम्बर, 1980 को जन्मे ओम नागर ने हिंदी की विविध विधाओं में साहित्य सृजन का कार्य किया है। कविता, संपादन आदि क्षेत्रों में सृजनरत ओम नागर ने 'नीब के चीरे से' शीर्षक से डायरी लेखन भी किया है। अपने रचनाकर्म के लिए इन्हें भारतीय ज्ञानपीठ का नदलेखन पुरस्कार, साहित्य अकादमी युवा पुरस्कार, सुमनेश जोशी पुरस्कार, 'बावजी चतरसिंह' अनुवाद पुरस्कार मिल चुके हैं। प्रसिद्ध लेखक मालचंद तिवाड़ी विजयदान देथा के जीवनकाल के अंतिम समय में लेखक तथा अनुवादक की भूमिका में देथा जी से जुड़े रहे। बोरूंदा की पहचान देथा जी से है। 'बोरूंदा डायरी' उन्हीं दिनों का लेखन है। यह देथा जी के जीवनकाल के अंतिम पड़ाव के मार्मिक प्रसंगों का दस्तावेज है। विजेंद्र द्वारा रचित डायरी 'संप्रेषण' पत्रिका में नियमित रूप से प्रकाशित होती रही। वहीं राजस्थान के जानेमाने रचनाकार माधव नागदा की डायरी वर्ष 2013 में 'फिर कभी बतलायेंगे' शीर्षक से प्रकाशित हुई। अन्य डायरियों में डायरी के पन्ने (रमेश कुमार शील), 'एक दिन की डायरी' (गोपालप्रसाद मुद्गल), 'डायरी के पन्ने' (योगेश चंद जानी), 'सृजन के क्षण' (रमेश गर्ग), 'विचारों की भरोटी' (घनश्याम दास बिड़ला), 'डायरी के पृष्ठ (मालचंद कमल), 'एक अंतहीन यात्रा' (किशोर गांधी) आदि रचनाएं भी इस दिशा में उल्लेखनीय है।

पीयर रिव्यूड रिसर्च जर्नल
ISSN : 2249-930X

डायरी लेखन करते समय कुछ बातों का ध्यान रखा जाना चाहिए। डायरी को हम किसी खाली कॉपी या रजिस्टर में लिखें या इस निमित्त किसी पुरानी डायरी का भी उपयोग किया जा सकता है। यहाँ इन बातों से आशय यह है कि यदि हम वर्तमान वर्ष की डायरी का उपयोग करते हैं तो कहीं न कहीं इस बात से बँध जाते हैं कि डायरी में किसी दिन के लिए जितना स्थान दिया गया है उसी में अपनी बात पूरी करें। जबकि ऐसा करना हमारे ऊपर एक प्रकार का बंधन होगा कारण कि किसी दिन की बात को हम मात्र कुछ पंक्तियों में पूरा करना चाहेंगे जबकि किसी दिन के घटनाक्रमों को हम एकाधिक पृष्ठों में पूरा करना चाहेंगे। अतः रजिस्टर, कॉपी या पुरानी डायरी में हम इस प्रकार के बंधन से मुक्त होकर अपने मन की बातों को लिख पायेंगे। उपलब्ध स्थान का कोई बंधन नहीं रहेगा। एक डायरी लेखक को इस बात का भी ध्यान रखना होगा कि दिन भर के घटनाक्रमों में से कौन सी बातें ऐसी महत्त्वपूर्ण हैं जिनका भविष्य में स्मरण आवश्यक है। अतः एक डायरी लेखक को चयन की ओर भी ध्यान देना होगा। उसे लेखन पर बंधन से भी मुक्त होना होगा। उसे यह नहीं सोचना चाहिए कि किसी घटना को यदि वह अपनी डायरी में लिखेगा तो लोग उसे क्या कहेंगे। डायरी मन के स्वाभाविक विचारों को स्वाभाविक वेग व भाषा में लिखी जानी चाहिए। उसका लेखन करते समय भाषा के परिष्कृत और मानक स्वरूप को लेकर विशेष सावधान रहने की आवश्यकता नहीं है। कारण कि डायरी लेखन का उद्देश्य समझौता करना न होकर सहज अभिव्यक्ति है। यह बिल्कुल निजी लेखन होता है अतः इसे लिखते समय किसी प्रकार का बंधन महसूस नहीं किया जाना चाहिए। एक डायरी लेखक को अपनी भावनाएँ और अनुभूतियाँ पूरी बेबाकी से लिखनी चाहिए। उसे यह समझना चाहिए कि उस लेखन का वह एकमात्र लेखक और पाठक दोनों ही है। डायरी वास्तव में मन की बारीक भावनाओं को सहेज कर रखने में हमारी सहायक होती है। डायरी स्वयं से दोस्ती करवाने में सहायक होती है। आज की भागदौड़ भरी जिंदगी में डायरी एक प्रकार से स्वयं से संवाद का माध्यम है। यह व्यक्ति को अकेलेपन और अवसाद से भी बचाती है। जिन बातों को हम किसी से कह नहीं सकते उन्हें हम स्वयं की डायरी में लिखकर मन को हल्का कर सकते हैं। डायरी एक प्रकार से स्वयं का मूल्यांकन करने का माध्यम भी है। इसके माध्यम से हम अपने वर्तमान व भविष्य के विषय में भली प्रकार से सोच सकते हैं। यह सुख–दुख की साथी होने के साथ–साथ नियमित लेखन की आदत को विकसित करती है, इससे हमारी स्मरण शक्ति का भी विकास होता है। भाषा के परिष्कार के साथ–साथ रोज डायरी लिखने से हमारी शब्द संपदा भी बढ़ती है।

स्पष्ट है कि दैनंदिनियाँ लेखकों के समय, परिवेश, व्यक्तित्व और कृतित्व को जानने–समझने की दृष्टि से नितांत उपयोगी है। उनकी कलात्मकता–अकलात्मकता या उनकी प्रभावशीलता–अप्रभावशीलता तो दैनंदिन–लेखकों की निजी क्षमताओं के अनुसार भिन्न–भिन्न होती है। हिंदी में दैनंदिनियों को प्रकाशन जोर पकड़ रहा है। इसलिए हिंदी का दैनंदिन–साहित्य क्रमशः संपन्न होता जा रहा है।"[8] किंतु राजस्थान में डायरी लेखन को लेकर बहुत अधिक उपस्थिति महसूस नहीं हो रही है। अब

ISSN : 2249-930X

रचनाकारों को इस दिशा में बढ़ने की आवश्यकता है। नए युवा रचनाकारों को भी इस दिशा में सोचना होगा।

ललित निबंध :

निबंध वह विधा है जिसमें रचनाकार किसी विषय को आधार बनाकर अपने विचारों को साहित्यिक शैली में अभिव्यक्ति प्रदान करता है। जब यह अभिव्यक्ति सरलता, मधुरता और आत्मीय शैली से युक्त हो जाती है तो वह निबंध ललित निबंध कहलाता है। ललित निबंधों में लेखक के व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति होती है। वह बिना किसी बाधा के अपनी रुचियों व प्रतिक्रियाओं को अभिव्यक्ति प्रदान करने के लिए स्वतंत्र होता है। इसमें निबंधकार अपनी मौज से अपने विचारों व भावों को वर्णित करता है। इसके लिए वह व्यक्तिव्यंजक शैली को अपनाता है। "ललित निबंध लेखक के व्यक्तित्व का पारदर्शी दर्पण होते हैं। ललित निबंधों की सृष्टि के लिए आवश्यक गुण विद्वता, मस्ती, फक्कड़ स्वभाव, यायावरी वृत्ति, लोककथा प्रेम, सूक्ष्म विचार शक्ति, व्यंग्य विनोद प्रियता और वर्तमान का सामंजस्य एवं भावात्मक शैली आदि है। हमारी दृष्टि में निबंध कला का यथार्थ रूप विकास और निखार के साथ उत्कर्ष ललित निबंधों की प्रमुख विशेषताएँ हैं।"[9]

व्यंग्यविनोद के साथ गंभीर चिंतन भी इसमें समाहित रहता है। रचनाकार व्यंग्य विनोद शैली में ही समाज व पाठकों को कोई निश्चित संदेश प्रदान कर देता है। विषय ललित निबंधों में मात्र एक बहाना होता है। लेखक विषय से अपनी बात प्रारंभ करते हुए तुरंत उससे संबंधित अन्य विषयों को समेटता हुआ आगे बढ़ता जाता है। लेखक बड़ी ही मधुर शैली में अपने व्यक्तित्व की व्यंजना करता है। भावुकता, सहजता और निश्छलता आद्योपांत द्रष्टव्य होती है। ललित निबंधों पर विचार करते हुए डॉ. गणपति चंद्र गुप्त कहते हैं कि– "विगत कुछ दशाब्दियों में निबंध के ही कलात्मक रूप पर विशेष बल देते हुए ललित निबंधों की रचना हुई है जिनमें विषय–वस्तु एवं विचारों के सुव्यवस्थित प्रतिपादन के स्थान पर निजी चिंतना एवं अनुभूति को स्वच्छंदतापूर्वक ललित शैली में व्यक्त किया गया है। लालित्य की प्रमुखता के कारण ही इन्हें ललित निबंध की संज्ञा दी गई है। किंतु इसका अर्थ यह नहीं है कि पूर्ववर्ती निबंधों में लालित्य का अभाव है। वस्तुतः निबंध जब भी साहित्य एवं कला का अंग बनता है तो उसमें साहित्यिकता, कलात्मकता एवं लालित्य का होना अनिवार्य है किंतु जहाँ सामान्य निबंधों में लेखक की वैयक्तिकता एवं शैली विषयवस्तु का अनुगमन करती है। वहाँ ललित निबंधों में विषयवस्तु सर्वथा पिछड़ जाती है। इसके अतिरिक्त ललित निबंधों में विचार की अपेक्षा अनुभूति का, तथ्य की अपेक्षा कल्पना का और विषयवस्तु के प्रतिपादन की अपेक्षा आत्म व्यंजना की प्रमुखता रहती है, इसलिए उसमें निबंधकार किसी क्रम, व्यवस्था, एवं पद्धति का अनुगमन नहीं करता।"[10]

हिंदी के प्रमुख ललित निबंधकारों में कुबेरनाथ राय, विद्यानिवास मिश्र, हजारीप्रसाद द्विवेदी, कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर, विवेकीराय, रामदरश मिश्र, धर्मवीर भारती आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। विद्यानिवास मिश्र ने 'छितवन की छाँह', 'तुम चंदन हम पानी', आँगन का पंछी और बंजारा मन', 'मेरे राम का मुकुट भीग रहा है' और 'कदम की फूली डाली आदि ललित निबंध संग्रहों की रचना की। वहीं कुबेरनाथ

ISSN : 2249-930X

राय के प्रमुख ललित निबंध संग्रहों में 'प्रिया निलकंठी', 'रस आखेटक', 'गंधमादन', 'विषाद वियोग', 'निषाद बांसुरी' और 'हरी हरी दूब और लाचार क्रोध' है। हजारीप्रसाद द्विवेदी के निबंध संग्रहों 'अशोक के फूल', विचार और विर्तक', 'कल्पलता', 'कुटज' आदि में विचारप्रधान निबंधों के साथ-साथ ललित निबंध भी संगृहीत हैं। विवेकीराय ने 'फिर बेतलवा डाल पर', 'बबूल', 'जुलूस रुका है' और 'गंवई गाँव की गंध', 'नया गाँव', 'आम रास्ता नहीं', 'जगत तपोवन सो कियो', केदारनाथ अग्रवाल ने 'समय समय पर', लक्ष्मीचंद जैन ने 'कागज की किश्तियाँ' की रचना की। धर्मवीर भारती के ललित निबंध 'ठेले पर हिमालय', 'पश्यंती', 'कहनी अनकहनी', 'शब्दिता' आदि संग्रहों में संगृहीत हैं।

नंद भारद्वाज के कुछ निबंध संग्रह प्रकाशित हुए उनमें 'संवाद निरंतर', 'साहित्य, परम्परा और नया रचनाकर्म' तथा 'संस्कृति, जनसंचार और बाजार' प्रमुख हैं।

ललित निबंधों को लेकर राजस्थान के रचनाकारों की बहुत अधिक उपस्थिति महसूस नहीं होती है। यही हाल देशभर की हिंदी का भी है। इस विधा को लेकर लिखने वालों की संख्या वहां भी अधिक नहीं है।

समग्र रूप से कहा जा सकता है कि राजस्थान के हिंदी जगत का लेखन अभी कथेतर गद्य की डायरी, यात्रा वृत्तांत और ललित निबंधों को लेकर अभी कुछ रिक्त स्थान रखता है। हमारे युवा रचनाकारों को इस दिशा में निश्चित रूप से अपनी कलम चलानी चाहिए।

संदर्भ सूची–

1. धीरेन्द्र वर्मा (सं.) हिंदी साहित्य कोश, ज्ञानमंडल, वाराणसी, 2013, पृ. 512
2. डॉ0 नगेंद्र, (सं.) हिंदी साहित्य का इतिहास, मयूर पेपरबैक्स, नोएडा, 2012, पृ. 821
3. धीरेन्द्र वर्मा (सं.) हिंदी साहित्य कोश, ज्ञानमंडल, वाराणसी, 2013, पृ. 512
4. http://vaniprakashanblog.blogspot.in/2012/03/blog-post_6024html
5. डॉ0 नगेंद्र (सं.) हिंदी साहित्य का इतिहास, मयूर पेपरबैक्स, नोएडा, 2012, पृ. 853
6. file///c:/User/44189/Desktop/ डायरी लेखन– एक तरल विधा–अरुण प्रकाश Gadya Kosh
7. डॉ0 मदन केवलिया, राजस्थान का हिंदी साहित्य, उदयपुर 1993, पृ. 296
8. http://bharatdiscovery.org/india/ एक साहित्यिक की डायरी–गजानन माधव मुक्तिबोध
9. डॉ0 नगेंद्र (सं.) हिंदी साहित्य का इतिहास, मयूर पेपरबैक्स, नोएडा, 2012 पृ. 856
10. रामशरणदास गुप्ता व राजकुमार शर्मा, साहित्य शस्त्र, कालेज बुक डिपो, जयपुर 2006, पृ. 90
11. गणपति चंद्र गुप्त, हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास, भाग–2, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 1998, पृ. 368

सहायक आचार्य हिन्दी विभाग,
मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय
उदयपुर–313001

हिन्दी की महिला आत्मकथाओं में नारी जीवन का यथार्थ

डॉ0 मुकेश कुमार

साहित्य और समाज जीवन का परस्पर पूरक सम्बन्ध रहा है। मानव, समाज, समाज जीवन, सामाजिक परिवेश, परिवर्तित समाज, सामाजिक मूल्य और युगबोध का अंकन करने वाला हिन्दी साहित्य रहा है। सजग साहित्यकार समकालीन परिस्थितियों अभिलाषाओं आदि का चित्रण करने में सक्षम होता है। अतः साहित्यकार सच्चाई की ओर बढ़ता है। फलस्वरूप 'परिवर्तनशीलता' साहित्य की विशेषता रही है। मानव चेतना जन जागृति साहित्य की आत्मा है। साहित्य का केन्द्र बिन्दु में मानव, मूल में मानव, परिधि में मानव ही है। अतः उसकी ही कथा मानव कथा, आत्मकथा है।

'आत्मकथा में आत्म–तत्त्व सर्वोपरि होता है। यों तो गद्य–पद्य की सभी विधाओं में यह तत्त्व अर्न्धाज्ञ के रूप में बसा रहता है। लेकिन गद्य की सर्वाधिक लोकप्रिय होती जाती विधा आत्मकथा का तो सारा दारोमदार इसी पर टिका रहता है। जितना सच होगा उसकी आत्मकथा उतनी ही श्रेष्ठ होती है।

हिन्दी आत्मकथा साहित्य का विकास तो प्रायः भारतेन्दु युग से ही होता है, किन्तु आत्मकथा का उद्भव इस काल से बहुत पहले रीतिकाल में भी हो चुका था। हिन्दी आत्मकथा साहित्य की प्रथम कृति के रूप में 'बनारसी दास जैन' कृत 'अर्द्धकथानक' सन् 1941 ई. में लिखी गई।

प्रमुख महिला आत्मकथाकारों में कुसुम अंसल, मन्नू भण्डारी, प्रभा खेतान, चन्द्रकिरण सौनरेक्सा, कृष्णा अग्निहोत्री, सुशीला टाकभौरे आदि की प्रमुख आत्मकथाओं में स्त्री जीवन के यथार्थ का विवेचन किया जायेगा। जिसमें सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, मनोवैज्ञानिक यथार्थ का आंकलन किया जाएगा।

कुसुम अंसल की आत्मकथा 'जो कहा नहीं गया' में सामाजिक जीवन का वर्णन किया है। जिसमें कुसुम अंसल जी का जन्म एक प्रतिष्ठित खानदान में हुआ था। उनके दादा जी बैरिस्टर थे और चार साल लंदन में रहकर शिक्षा प्राप्त की थी। उनके पिता जी खूब पढ़े लिखे थे। साहित्य और कला में उनका बहुत गहरा सम्बन्ध था। कुसुम अंसल को अपने खानदान की मर्यादा और पिता जी की प्रतिष्ठा के कारण हमेशा आदर मिलता रहा था। मगर वह कई बार उनके समाज में अपनी एक पहचान स्थापित करने में एक बाधा बन गया था। इसके बारे में बताते हुए लेखिका एक